2024

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ५

अक्टूबर - २०२४

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... व्यक्ति के ज्ञानतंतुओ को निर्बल बनाते है।
२. क्रुरता मानवी की ..... का नाश करता है।
३. स्वयं के हाथों से ही जीवादिक का घात करना वो ..... क्रिया है।
४. सच्ची लोकप्रियता प्रचार से नहीं ..... से मिलती है।
५. संसार में से छुटने के लिए ..... और करुणा चाहिए।
६. पूर्वभव के पुण्योदय से श्रेष्ठिवर्य को ..... की प्राप्ति हुयी।
७. ..... एवं सुख केन्द्रिय जीव स्वयं के सुख के लिए क्या करेगा इसका कोई भरोसा नहीं है।
८. शक्रस्तव सूत्र से अरिहंत होकर ..... को पाये हुए सर्व जिनेश्वरो को वंदन किया गया है।
९. जहाँ दान और शील हो वहाँ ..... का वास स्वयंमेव हो जाता है।
१०. जीवदया के सच्चे परिणाम के बगैर जीवन में सच्ची ..... असंभवित है।
११. औरो के ..... देखने से मन हमेशा कलुषित रहता है।
१२. श्री ..... प्रभु के प्रभाव से देश में हुयी मरकी शांत हुयी।
१३. काया अति आनंद मुज, तुम ..... स्पर्शे।
१४. दान का प्रत्यक्ष फल..... और किर्ती है।
१५. तीखा, कडवा ..... रस है।
१६. जब तक जीवन शुद्ध पवित्र नहीं बनता तब तक उसमें धर्म की ..... आराधना संभवित नहीं।
१७. एकाद भी इन्द्रिय जिस जीव को कम हो वह ..... कहलाता है।
१८. पाप और पुण्य का खेल ..... है।
१९. लोकप्रियता अनेको के जीवन में सद्मार्ग, सद्धर्म के..... बो देता है।
२०. पात्रता योग्यता होते हुए भी लाभ न होने दे वह ..... कर्म।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. सब के मूल में किसका त्याग करना महत्व का है ?
२. किसको देखने के लिए मेरे नयना तरस रहे है?
३. धर्म प्राप्ति का प्रथम सोपान क्या ?
४. नरक में भी कर्म कौन तोड सकते है ?
५. श्री नमिनाथ प्रभु के शासन में हुए ग्यारहवें चक्रवर्ती का नाम क्या है ?
६. इर्या याने क्या ?
७. किसके पाप से सुखी परिवार बिखर गये है ?
८. सुजात के पिता का नाम क्या था ?
९. दुःख पीछा छोडता नहीं, इसका मूल कारण क्या ?
१०. शील के गुणों से सुवासित कौन बने ?
११. दुनिया में किसका तांडव नृत्य चल रहा है ?
१२. नंदावर्त लंछनवाले प्रभु का नाम क्या ?
१३. कुबेर के पुत्र का गौण नाम क्या ?
१४. बहन को साहेबजी के पास क्या लेना था ?
१५. कष याने संसार तो आय याने क्या ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. मसगा २) नवबीअे ३) सहुम ४) अयलं ५) जाई ६) वण्ण ७) अहिगरणीया ८) सग्गे ९) तिरिया १०) समुदाण
११. ताइं १२) अव्वय १३) लोअप्पिओ १४) अपचख्खाण १५) मग्गदयाणं १६) तिहा १७) मसुभ १८) संपई
१९. पणवीसं २०) सुरा

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) खडगी	१) नेत्रो का दान	६) श्रध्धारुपी	६) लालन
२) चर्मरोगी	२) अपयश	७) विवेक	७) सिंहवर राजा
३) सर्वविरति	३) यक्षिणी	८) वैरोटया	८) साधु जीवन
४) शिकार में तल्लीन	४) अपटुडेट	९) चोर	९) उपयोग
५) आभोग	५) चंद्रयशा	१०) नामकर्म	१०) पर्वत

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री मुनिसुव्रत प्रभु के गणधर कितने ?
२. व्यसन कितने है ?
३. मघा नारकी की लंबाई कितना राज है ?
४. श्री कुंथुनाथ प्रभु की उंचाई कितने धनुष थी ?
५. दर्शनावरणीय कर्म के भेद कितने है ?
६. अरिहंत की माता पाँचवे स्वप्न में कितने पुष्पों की माला देखती है ?
७. आश्रव तत्व के भेद कितने ?
८. पाप कितने प्रकार से भोगा जाता है ?
९. मेघरथ राजाने कितने पुत्रो के साथ दीक्षा ली ?
१०. क्रियायें कितनी हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. प्रत्येक व्यक्ति महान नहीं बन सकता पर प्रत्येक व्यक्ति सदाचारी जरुर बन सकता है ।
२. दुर्भग नामकर्म से कर्कश स्वर की प्राप्ति होती है ।
३. मदिरा तो घनरुपी काष्ट को जलाने में अग्नि समान है ।
४. नाराच याने हड्डियों के जोड में मात्र कील हो ऐसा गठन ।
५. क्रुरता, करुणा और मैत्री के परिणाम की चाहक है ।
६. दान से बैरका नाश होता है ।
७. अयतना से उठना, बैठना, सोना वगैरह कायिकी क्रिया है ।
८. श्री मल्लिनाथ प्रभुकी पुष्पवती प्रमुख साध्वी थी ।
९. तीर्थंकर परमात्मा द्वारा प्ररुपित मार्ग में श्रद्धा हो वो मिथ्यात्व मोहनीय कर्म ।
१०. विश्वसेन राजा की अचिरादेवी रानी थी ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. साहेब, मुझे बचा लो यह भूल एक बार नहीं दो बार मुझसे हो गयी है ।
२. हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म और परिग्रह इनका त्याग ये व्रत है ।
३. विनय सब गुणों में महान है ।
४. इस आनेवाले व्यक्ति को गुप्त रीति से मार डालना ।
५. नीम या बबुल बोनेवाले को आम कहाँ से मिले ?
६. निर्दोष जीवों की मूक जीवों की आहे पाकर कौन सुखी हो सकेगा ।
७. छठवें भव में महाविदेह में अपराजित नामक बलदेव हुए ।
८. आज हम भूलों पर भूलें, पापों पर पाप करते जा रहे है ।
९. दृष्टि मात्र से अत्यंत सुख की प्राप्ति होती है ।
१०. उन सभी को मन, वचन, काया के द्वारा इन तीन प्रकार से मैं वंदन करता हूँ ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. श्री शांतिनाथ प्रभुका दसवां भव २) पाँच निद्रा ३) चोरी और शिकार का व्यसन
४. शक्रस्तव सूत्र की ९ वीं और १० वीं गाथा का भावार्थ ।
५. चिलाती पुत्र का उपशम, विवेक और संवर पर चिंतन ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com